ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):312-319

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

अभिषेक त्रिपाठी एवं अच्युत कुमार यादव

शिक्षाशास्त्र, विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

Received: 23.09.2025 *Revised: 11.10.2025* *Accepted: 08.11.2025*

सारांश

प्रस्तुत समस्या कथन के अन्तर्गत ''सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर आधारित है जिसके अन्तर्गत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है जिसमें 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण महाविद्यालयों से 40–40 विद्यार्थियों का चयन किया गया साथ ही यह भी ध्यान में रखा गया है कि 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब है एवं 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन में आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालयों से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब है एवं आईसीटी प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालय से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब नहीं है तत्पश्चात् उन विद्यार्थियों के चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों को शैक्षिक निष्पत्ति के रूप में सम्मिलित किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। प्राप्त निष्कर्ष – शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों जो कि आईसीटी का प्रयोग करते हैं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति आईसीटी प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं न करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों द्वारा आईसीटी का प्रयोग शिक्षा के दृष्टिकोण से उच्च स्तर पर किया जाता है तथा साथ ही उनमें आईसीटी के प्रति जागरूकता अधिक हो सकती है। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण का प्रभाव हो सकता है क्योंकि शहरी क्षेत्रों के

महाविद्यालयों में आईसीटी संसाधनों की सुविधा एवं घर के वातावरण में आईसीटी का अत्यधिक प्रयोग भी इनके शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि का कारण हो सकता है।

मुख्य शब्द–*सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, उपयोग, शहरी, ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, शैक्षिक निष्पत्ति*

प्रस्तावना–

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का एकीकरण एक आशाजनक समाधान प्रदान करता है, शैक्षिक अनुभव को बढ़ाता है और सीखने के संसाधनों तक समान पहुंच सुनिश्चित करता है, जिससे शैक्षिक परिदृश्य में वृद्धि होती है। वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी का प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्रौद्योगिकी ने आज हमारे सोचने–विचारने, बातचीत करने, एक–दूसरे के साथ संपर्क और प्रेशण करने के तौर–तरीकों में एकदम बदलाव ला दिया है। आज मानवीय पक्ष का कोई भाग ऐसा नहीं है जो प्रौद्योगिकी या तकनीकी के प्रभाव से अछूता रहा हो। शिक्षा का क्षेत्र भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। प्रत्येक शैक्षिक क्षेत्र में चाहे वह उद्देश्यों के निर्धारण का हो, विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण का हो, शैक्षिक उद्देश्यों के मूल्यांकन का हो, अनुसंधान से संबंधित हो अथवा शिक्षा में नवाचार के प्रयोग का हो, प्रौद्योगिकी से युक्त ज्ञान और बदलाव की महत्ती आवश्यकता की ओर दृष्टिगत होती हैं। आज प्रौद्योगिकी द्वारा ही अधिगम शैली एवं शैक्षिक निष्पत्ति के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभावशाली परिवर्तन संभव हो पाया है।

जब से प्रौद्योगिकी को एक शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग किया गया हैं इसने एक त्रुटिहीन प्रेरक साधन के रूप में कार्य किया है, इस में वीडियो, टेलीविजन, मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर, सॉफ्टवेयर का उपयोग शामिल हैं इससे छात्र सीखने की प्रक्रिया में गहराई से जुड़ते है। सम्प्रतयात्मक दृष्टिकोण से इन सभी संसाधनों के प्रयोग को सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी के नाम से अभिग्रहीत किया जाता है।

शिक्षा में आईसीटी के उपयोग ने व्यक्तिगत शिक्षण प्राप्त किया है। इसका मतलब है कि व्यक्ति एक सजातीय समूह के रूप में नहीं बल्कि व्यक्ति के रूप में सीखते हैं। आईसीटी प्रत्येक व्यक्ति को माध्यम और इसकी सामग्री से संबंधित होने की अनुमति देता है। कोई भी व्यक्ति सामग्री में आगे या पीछे जा सकता है, किसी भी बिंदु पर पहले के ज्ञान के आधार पर शुरू होता है, जो हमेशा एक क्रमिक तरीके से होता है। कंप्यूटर और इंटरनेट आधारित शिक्षण मूल्यवान उपकरण और प्रशिक्षण हो सकता है, समस्याओं की पहचान और समाधान में मदद करने के लिए, कई संबंधित विषयों के बारे में जानकारी और ज्ञान प्राप्त करने के लिए। इसके अलावा, शिक्षा में आईसीटी का उपयोग सीखने के दृष्टिकोण को भी बदल देता है।

शिक्षा एवं शिक्षण में प्रयोग होने वाले आईसीटी में उपकरण–

- डेस्कटॉप, लैपटॉप, टेबलेट
- प्रोजेक्टर
- डिजिटल कैमरा
- मोबाइल फोन
- स्मार्ट टीवी
- इंटरनेट
- स्मार्ट वॉच
- स्कैनर, प्रिंटर
- फोटो कॉपियर
- पेन ड्राइव, सीडीएस, डीवीडी
- वेब बोर्ड
- परस्पर संवादात्मक सफेद बोर्ड

इस प्रकार हम देखते हैं कि शैक्षिक उपलब्धि, स्नातक स्तर विद्यार्थी के सर्वाधिक विकास के लिए अन्ततः आवश्यक है। वर्तमान में जिस प्रकार से स्नातक स्तर के विद्यार्थी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से अधिगम कर रहे हैं साथ ही शिक्षकों द्वारा भी इसका प्रयोग शिक्षण कार्य को सुगम बनाने हेतु किया जा रहा है। चूंकि शिक्षा एक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है इसलिए विद्यार्थियों पर आई.सी.टी. के शैक्षिक प्रभावों के साथ अधिगम शैली एवं शैक्षिक निष्पत्ति में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई0सी.टी.) अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है और यह महत्व 21वीं सदी में बढ़ता और विकसित होता रहेगा। शिक्षा एक बहुत ही सामाजिक रूप से उन्मुख गतिविधि है और शिक्षार्थियों के साथ व्यक्तिगत संपर्क। विशेश रूपसे पेपर में यह राय दी गई है कि आईसीटी ने आज तक शिक्षा में शैक्षणिक अभ्यास पर काफी छोटे तरीकों से प्रभाव डाला है, लेकिन आने वाले वर्शों में इसका प्रभाव काफी बढ़ जाएगा। इन गतिविधियों और प्रथाओं को अपनाने से, शिक्षा के भीतर आईसीटी के निरंतर उपयोग और विकास का शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया पर एक मजबूत प्रभाव पड़ेगा। सूचना और प्रौद्योगिकी (आईसीटी) जीवन के सभी पहलुओं में आम जगह बन गई हैं। पिछले बीस वर्शों में पाँच वर्शों में आईसीटी के उपयोग ने व्यवसाय और शासन के लगभग सभी प्रयासों की प्रथाओं और प्रक्रियाओं को मौलिक रूप से बदल दिया है। शिक्षा के भीतर, आईसीटी की उपस्थिति शुरू हो गई है लेकिन इसका प्रभाव अन्य क्षेत्रों जितना व्यापक नहीं है। शिक्षा एक बहुत ही सामाजिक रूप से उन्मुख गतिविधि है और शिक्षा की गुणवत्ता पारंपरिक रूप से रही है। शिक्षार्थियों के साथ उच्च स्तर के व्यक्तिगत संपर्क रखने वाले मजबूत शिक्षकों से जुड़ा हुआ है। शिक्षा में आईसीटी का उपयोग अधिक छात्रों को केन्द्र में रखकर सीखने की व्यवस्था की ओर ले

जाता है और अक्सर यह कुछ शिक्षकों और छात्रों के लिए तनाव पैदा करता है, हालांकि दुनिया तेजी से डिजिटल मीडिया और सूचना की ओर बढ़ रही है। शिक्षा में आईसीटी की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। और वह महत्व बढ़ता ही रहेगा।

जेम्स कानफार्ड और नील पोलोक (2003) ने अपनी पुस्तक ''पुटिंग द यूनिवर्सिटी ऑन लाइन (2003)'' में संचार के साधनों एवं शिक्षा के आपसी सम्बन्धों को स्पष्टता देते हुए कहा कि संचार प्रौद्योगिकी यदि विश्वविद्यालय की सीमाओं को अस्थिर कर रही है तो उनका उपयोग सीमाओं के विस्तार करने के लिए भी किया जा सकता है। यदि इनके कारण विश्वविद्यालयों के विखण्डित होने का खतरा पैदा हो गया है तो ये इनको एक–दूसरे से बांध भी सकती है। उन तकनीकियों का प्रयोग कर उच्च शिक्षा की पुर्नसंरचना और नये माहौल के अनुरूप विश्वविद्यालय को नये सिरे से तैयार करने की दृष्टि से ऑनलाइन एवं वर्चुअल विश्वविद्यालय उच्च के भविष्य का अत्यन्त प्रबल दर्शन बनकर उभरा है। कुमार (2004) ने अपने लेख अध्यापक – शिक्षा में सूचना – सम्प्रेषण तकनीकी के अन्तर्गत बताया है कि सूचना– संप्रेषण तकनीकी प्रकृतिवादी निषेधात्मक शिक्षा है, ये इसी के समान सभी संवेदी अंगों को संवेदनशील बनाकर सूचनाओं को प्रभावशाली ढंग से ग्रहण कर सकता है। ये वातावरण को बहुआयामी, रूचिपूर्ण और आकर्षक बनाकर व्यक्तिगत अधिगम एवं स्वअनुदेशन का वातावरण निर्मित करता है। साइबर शिक्षा के लिए इस समय भारत में निम्नलिखित वेबसाइट्स है – स्कूलनेटमीडिया.कॉम, ई–गुरूकुल.कॉम, कैरियरलांसर.कॉम, एजूकेशनल वर्डवीडीगटोकॉम आदि शिक्षा क्षेत्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही है। ई.बुक, सी0डी0 रोम, ई–बुक रीडर का प्रयोग भी निरंतर बढ़ रहा है। हिथर ग्रिनेगर (2006). ने एक शोध कार्य किया जिसमें उन्होनें शिक्षा में तकनीकी के द्वारा विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने की कोशिश की। उन्होने अपने शोध से यह पाया कि यदि शिक्षण के समय शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग उपयुक्त ढंग से किया जाये तो विद्यार्थी पर इसका प्रभाव भी सकारात्मक होगा और वह शिक्षा के हर स्तर व क्षेत्र में अधिक क्रियाशील रहेंगे और क्रियाशीलता के चलते उनके उपलब्धि स्तर में भी वृद्धि हो सकेगी। नस्बन्दी (2007). द्वारा द्वारा शोध अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैः– मॉडल द्वारा शिक्षण करने से विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। प्रयोग द्वारा शिक्षण करने से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। शर्मा, मोनिका (2022) के अध्ययन निष्कर्ष– उच्च प्राथमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत अध्ययनरत् दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आई.सी.टी. का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पाण्डे, चन्द्रा एवं वर्मा, मुकेश (2023) के परिणाम सूचना और सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग करने से माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वर्मा, मुकेश एवं यादव, सुनीता (2023) के परिणाम आई०सी०टी० का प्रयोग करने से शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सिंह, अनुपम (2024) ने अध्ययन के परिणाम में इंगित

किया कि– अतः महाविद्यालयों को भी तकनीकी ज्ञान के लिए शिक्षक–प्रशिक्षण व्यवस्था करनी चाहिए जिससे वर्तमान में शिक्षा–व्यवस्था में लागू तकनीकी का विद्यालय में शत्–प्रतिशत प्रयोग कर शिक्षक विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा प्रदान कर सकें तथा विद्यार्थियों को भी तकनीकी संसाधनों का लाभ प्राप्त हो सकें।

समस्या कथन–

"सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"।

शोध का उद्देश्य

1. आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
2. आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
2. आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है जिसमें 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण महाविद्यालयों से 40–40 विद्यार्थियों का चयन किया गया साथ ही यह भी ध्यान में रखा गया है कि 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब है एवं 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब नहीं है।

उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालयों से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब है एवं आईसीटी प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालय से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब नहीं है तत्पश्चात् उन विद्यार्थियों के चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों को शैक्षिक निष्पत्ति के रूप में

सम्मिलित किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ–

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

H_{01} **आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

सारणी सं0 1

आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के प्राप्तांकों के मध्य टी–अनुपात का अन्तर

क्र0सं0	आईसीटी का प्रयोग करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों			आईसीटी का प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों		
	N	M	S.D.	N	M	S.D.
	250	340.19	47.99	150	307.57	42.21
$D=(M_1 \sim M_2)$	36.62					
σ_D	4.59					
t-value	7.11					
df = 398 = .05 (1.97) /.01 (2.59) = सार्थक						

व्याख्या–

सारणी सं0 1 में दिये गये मान के आधार पर आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान क्रमशः 340.19 एवं 307.57 तथा मानक विचलन क्रमशः 47.99 एवं 42.21 है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 36.62 तथा मानक त्रुटि 4.59 तथा टी–अनुपात 7.11 प्राप्त हुआ, जो स्वतन्त्रांश (398=0.05 (1.97) एवं .01 (2.59)) पर दिये गये मान से अधिक है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत होती है जबकि शोध–परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

परिणाम–

शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना के परीक्षणोपरान्त पाया गया कि **"आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की**

शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है" अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

2. **आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।**

H_{02} आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 2

आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के प्राप्तांकों के मध्य टी–अनुपात का अन्तर

क्र0सं0	आईसीटी का प्रयोग करने वाले शहरी विद्यार्थियों			आईसीटी का प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों		
	N	**M**	**S.D.**	**N**	**M**	**S.D.**
	250	380.08	66.57	150	330.29	53.26
D=(M_1~M_2)	49.79					
σ_D	6.05					
t-value	8.23					
df = 398 = .05 (1.97) /.01 (2.59) = सार्थक						

व्याख्या–

सारणी सं0 2 में दिये गये मान के आधार पर आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान क्रमशः 380.08 एवं 330.29 तथा मानक विचलन क्रमशः 66.57 एवं 53.26 है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 49.79 तथा मानक त्रुटि 6.05 तथा टी–अनुपात 8.23 प्राप्त हुआ, जो स्वतन्त्रांश (398=0.05 (1.97) एवं .01 (2.59)) पर दिये गये मान से अधिक है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत होती है जबकि शोध–परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

परिणाम–

शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना के परीक्षणोपरान्त पाया गया कि **"आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है" अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।**

निष्कर्ष–

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर है अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति प्रयोग न करने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।
- आईसीटी का प्रयोग करने वाले और प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर है अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्निहोत्री, रवीन्द्र (2007), *आधुनिक भारतीय शिक्षाः समस्या और समाधान.* जयपुरः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- कानफोर्ड, जेम्स एण्ड पोलोक नील, पुटिंग द यूनिवर्सिटी ऑनलाइन 2003, दि सोसायटी फॉर रिसर्च इन टू हायर एजुकेशन एण्ड ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस, यू0के0।
- गोस्वामी, सरिता (2021). सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड्स इन्फार्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी इन मेरठ सिटी : ए कम्प्रेटिव स्टडी, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च,* 7(1). पृ0 385–388
- यादव, प्रदीप (2025). स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं अधिगम शैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
- वर्मा, मुकेश एवं यादव, सुनीता (2023). बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आई०सी०टी० प्रयोग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, वॉ0 11, नं0 1, पृ0 757–763
- शर्मा, मोनिका (2022). उच्च प्राथमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा में आई.सी.टी. के प्रभाव का अध्ययन– कोविड–19 के परिदृश्य में, लघु शोध प्रबन्ध (विशेष शिक्षा), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
- सिंह, अनुपम (2024). बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर तकनीकी ज्ञान के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
- हिथर ग्रिनेगर (2006). शिक्षा में तकनीकी के द्वारा विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव, www.google.com

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.